मॉड्यूल 2 वीडियो कक्षा 2: सिल्वी ब्रायंड के साथ साक्षात्कार

नमस्ते। 'महामारी में पत्राकारिताः कोविड-19 को वर्तमान और भविष्य में कवर करना' नामक पाठ्यक्रम के मॉड्यूल दो के वीडियो सेगमेंट में आपका एक बार फिर से स्वागत है। आज हम विश्व स्वास्थ्य संगठन में वैश्विक संक्रामक खतरों की तैयारी संबंधी विभाग के निदेशक डॉ. सिल्वी ब्रायंड से बात कर रहे हैं। डॉ. ब्रायंड, इस पाठ्यक्रम में एक सौ पैंसठ देशों के शामिल होने वाले सात हजार से अधिक छात्रों की ओर से मैं उनसे बात करने और समय निकालने के लिए आपका धन्यवाद करती हूं। मेरा सबसे पहला प्रश्न आपसे यह है कि इस कोर्स में शामिल होने वाले कई पत्रकारों ने शायद पहले कभी जन स्वास्थ्य को कवर नहीं किया होगा या डब्ल्यू.एच.ओ. के साथ बातचीत नहीं की होगी। तो क्या आप हमें बहुत संक्षेप में यह बता सकते हैं कि डब्ल्यू.एच.ओ. कोविड से निपटने के लिए कैसे काम करता है और इस काम में आपकी क्या भूमिका थी?

डब्ल्यू.एच.ओ. संयुक्त राष्ट्र की एक एजेंसी है और यह 194 सदस्य देशों द्वारा शासित होती है। इसलिए, हम काम करते हैं। मेरा मतलब है, डब्ल्यू.एच.ओ. सचिवालय उन 194 सदस्य राज्यों के लिए काम करता है। और कोविड-19 में हमारी भूमिका अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियम द्वारा निर्देशित है, जो कि एक कानूनी समझौता है जिस पर 2005 में सभी सदस्य देशों द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे।

यह डब्ल्यू.एच.ओ. को नई आपात स्थितियों के शुरुआती चरण का पता लगाने के लिए सदस्य देशों के साथ मिलकर कार्य करने का अधिदेश प्रदान करता है। फिर हम जानकारी का सत्यापन करते हैं। अंत में, हमारे पास प्राप्त प्रतिक्रिया को समन्वित करने का भी अधिदेश है। इसलिए हम इस प्रकोप की प्रतिक्रिया के सभी पहलुओं पर काम करते हैं जो निगरानी से लेकर डेटा संग्रह तक होता है ताकि सदस्य देशों को तकनीकी सहायता प्रदान की जा सके और वे अपने देशों में स्थिति से प्रभावी ढंग से कैसे निपटें।

इसके अलावा, हम आपूर्ति प्रदान करते हैं, जैसे इलाज हेतु सभी व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराना। जब हमारे पास वैक्सीन या उपचार उपलब्ध होगा तब हम दुनिया को उन चिकित्सा उत्पादों को उपलब्ध कराने में भी मदद करेंगे।

इस जानकारी के लिए शुक्रिया। हर सुबह जब मैं अपना ईमेल खोलता हूं तो मुझे लगभग हर दिन डब्ल्यू.एच.ओ. की मीडिया ब्रीफिंग के लिए पत्रकारों को निर्देश देने वाला एक नोट प्राप्त होता है। यह प्रेस

और जनता के साथ संवाद करने के लिए स्पष्ट रूप से एक व्यापक प्रयास है। तो आप मुझे यह बता सकते हैं कि क्या डब्ल्यू.एच.ओ. में कोविड-19 जैसे खतरों के बारे में जनता और प्रेस को सूचित करने के लिए कोई मुख्य सिद्धांत या मूल रणनीति है?

हाँ, हमें लगता है कि डब्ल्यू.एच.ओ. को प्रकोप का प्रबंध्न करने का बहुत अनुभव है क्योंकि हम डब्ल्यूएचओ के अस्तित्व में आने के बाद से ही यानी 1948 से काम कर रहे हैं, और यह एजेंसी मिस्र में हैजा के प्रकोप के बाद बनाई गई थी, जहां सभी देशों ने महसूस किया कि महामारी की कोई सीमा नहीं होती। इसलिए यदि आप वास्तव में महामारी को कारगर ढंग से नियंत्रित करना चाहते हैं, तो आपको एक साथ मिलकर काम करना होगा। इसीलिए डब्ल्यू.एच.ओ. उन प्रकोपों से निपटने में मुख्य भूमिका निभाता है। और प्रतिक्रिया का हिस्सा वास्तव में सूचना है, क्योंकि आपको यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हर किसी को जानकारी मिले, सही समय पर सही जानकारी प्राप्त हो, ताकि वे वास्तव में इस जानकारी के आधार पर कार्य कर सकें।

इसलिए मीडिया के साथ संबंध बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि पत्रकार इन प्रतिक्रिया का हिस्सा हैं। पत्रकारिता और अच्छी पत्रकारिता की बदौलत आप सुनिश्चित कर सकते हैं कि अच्छी और सही जानकारी लोगों तक पहुंचे। प्रकोप की प्रतिक्रिया में, हर कोई अग्रिम पंक्ति में होता है। जैसा आप कोविड के मामले में देखते हैं, उदाहरण के लिए, आपके पास स्वास्थ्य कार्यकर्ता हैं जो रोगियों का इलाज कर रहे हैं। लेकिन साथ ही हम हर किसी से अपने हाथ धेने, शारीरिक दूरी बनाए रखने, सांस संबंधी कुछ नियमों का पालन करते हुए मास्क पहनने के लिए भी कहते हैं। इस प्रकार हर कोई वायरस के फैलने की दर को धीमा करने में योगदान देता है। मीडिया और पत्रकार वास्तव में उन संदेशों को लोगों तक पहुंचाने में सहायक होते हैं, जनता को यह समझाते हैं कि यह बीमारी क्या है, यह वायरस क्या है और आप अपने को बचाने और अपने परिवारों की सुरक्षा के लिए क्या कर सकते हैं।

इसीलिए हम पत्रकारों को लगातार यह बताने की भी कोशिश करते हैं कि हम इस बीमारी के बारे में क्या जानते हैं। इसके अलावा, हम यह भी चाहेंगे कि बाकी लोगों को बताने के लिए क्या सिफारिश की जानी चाहिए। इसलिए पत्रकार वास्तव में सूचना का व्यापक रूप से प्रसार करते हैं और इस प्रकार वे आबादी को जानकारी देने में हमारी मदद करते हैं क्योंकि कोविड-19 एक बहुत ही नई बीमारी है। दिसंबर 2019 से पहले, इसके बारे में कोई नहीं जानता था। विज्ञान अच्छी प्रगति कर रहा है और बहुत तेजी से आगे

बढ़ रहा है। लेकिन फिर भी, मेरा मतलब है, हर दिन हम वायरस के बारे में, एक बीमारी के बारे में, बीमारी के उजागर होने के बारे में कुछ पता लगाते हैं कि लोग इसे कैसे नियंत्रित कर सकते हैं। इसलिए हमारे पास जो जानकारी एकत्र हुई है वह भी मीडिया के माध्यम से आई है।

धन्यवाद। हम कुछ देर बाद विज्ञान पर फिर से बात करेंगे, लेकिन इससे पहले मैं आपसे यह पूछना चाहती हूं कि आप डब्ल्यू.एच.ओ. में 10 से अधिक वर्षों तक प्रकोप से निपटने से जुड़े रहे हैं, और इसमें 2009 में एच1 एन1 महामारी के दौरान वैश्विक इन्फ्लूएंजा कार्यक्रम का नेतृत्व करना भी शामिल है। मैं यह जानना चाहती हूं कि क्या आप हमें संक्षेप में यह बता सकते हैं कि वर्तमान महामारी और इसकी प्रतिक्रिया 2009 में आई महामारी से किस तरह से भिन्न है।

हाँ, 2009 बहुत ही विशेष था क्योंकि वास्तव में, यह सार्स के बाद हुआ था और सार्स 2003 में हुआ था। और इसलिए सार्स वास्तव में कई देशों के लिए एक चेतावनी थी जिसने उन्हें यह एहसास दिलाया कि आज दुनिया किस तरह से एक-दूसरे से जुड़ी है और किस तरह कुछ हजार मामले हो गए, क्योंकि सार्स के 8,000 मामले हुए और इससे 800 लोगों की मौत हुईं। और यह भी कि इस तरह की नई बीमारी का प्रकोप पूरी तरह से अर्थव्यवस्था को कैसे अस्थिर कर सकता है।

इसलिए उन्होंने वास्तव में यह महसूस किया कि हमें इसके बारे में कुछ करना चाहिए। उसी वर्ष एच5-एन1 ने फिर से दस्तक दी, इसका 1997 में पूरी तरह से खात्मा हो गया था, लेकिन 2003 में यह फिर से उभरा और 2005 में हमने विभिन्न देशों में बड़ी संख्या में क्लस्टर बनाए लेकिन फिर भी दुनिया वास्तव में एक महामारी के कारण भयभीत थी क्योंकि उदाहरण के तौर पर 1918 की महामारी ने लाखों लोगों की जान ले ली थी। इसलिए इन्फ्लूएंजा महामारी के फिर से उभरने को लेकर हर कोई वास्तव में भयभीत था। 2005 में एक नया अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियम अपनाया गया और 2009 में जब एच1एन1 महामारी की शुरुआत हुई, तो इसमें तैयारियों को शामिल किया गया था।

बहुत से देशों ने वास्तव में अच्छी तैयारी की है। उदाहरण के लिए, यूरोप में देश के अधिकांश हिस्सों में मास्क को जमा करके रखा गया। उन्होंने रोग का इलाज करने और प्रयोगशालाओं का नेटवर्क बनाने की व्यवस्था की। उनके पास बढ़ते मामलों से निपटने, अस्पताल के लिए आकस्मिक योजना बनाने और ऐसी क्षमता विकसित करने आदि के लिए सभी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के रोस्टर भी हैं। इसलिए 2009 से

पहले बहुत सारी तैयारियां चल रही थीं। इसलिए जब महामारी शुरू हुई, तो यह एक विकट समस्या थी। लेकिन क्योंकि लोग तैयार थे, मुझे लगता है कि क्रमबद्ध उपाय काफी व्यावहारिक थे। मेरा मतलब है कि देशों ने एक साथ मिलकर काम किया था। इसलिए हमारे सामने बड़ी समस्याएं नहीं आईं। यही वजह है कि मृत्यु दर भी काफी कम रही। इसीलिए लोगों ने सोचा, ठीक है, यह वास्तव में एक हल्की महामारी थी। उन्होंने सोचा कि यदि महामारी इतनी ही मामूली थी तो हमने इसके लिए अपनी इतनी ऊर्जा क्यों खर्च की? 2009 की महामारी के बाद, वास्तव में एक तरह से महामारी संबंधी तैयारियां धीमी पड़ गईं।

कई देशों ने अपनी योजनाओं के अनुसार तैयारी नहीं की और उन्होंने मास्क को जमा करके नहीं रखा और उन्हें लगा कि यह ठीक है। अब, 21वीं सदी में महामारी वास्तव में कोई मुद्दा नहीं है। और इसलिए इस मुद्दे को इन्फ्लूएंजा महामारी से निपटने की तरह ही लिया गया, हमारे पास वैक्सीन तुरंत उपलब्ध नहीं हैं क्योंकि आपको अभी महामारी वायरस के लिए एक नया टीका तैयार करना है। लेकिन फिर भी, तकनीक मौजूद है। हम जानते हैं कि इसे कैसे करना है। इन्फ्लूएंजा के लिए, हमारे पास एंटीवायरल और उपचार भी हैं। इसलिए वास्तव में महामारी के पहले दो महीने एंटीवायरल और टीके के उत्पादन को बढ़ाने के लिए थे। लेकिन छह महीने के बाद, मूल रूप से, महामारी से निपटने के लिए हमारे पास चिकित्सा उपकरण और चिकित्सा इलाज था।

कोविड-19 के लिए, जब हमने इस महामारी पर काम करना शुरू किया था, तो पहले कुछ सप्ताह में हमें वास्तव में नहीं पता था कि समस्या क्या है क्योंकि हम अभी भी उम्मीद कर रहे थे कि यह सार्स की तरह होगा और हम इसके उभरने वाले देश चीन में ही इसे नियंत्रित कर लेंगे। इसलिए शुरुआत में, जब हमने 30 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आपातकाल की घोषणा की तो उस समय चीन के बाहर केवल 80 मामले थे और एक भी मौत नहीं हुई थी।

इसलिए उस समय, हमने आपातकालीन समिति से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जन स्वास्थ्य आपातकाल की घोषणा करने के लिए कहा। उनका मत विभाजित था। उनमें से कुछ कह रहे थे, नहीं, यह कुछ भी नहीं है, यह चला जाएगा। और दूसरों ने कहा, नहीं, इसमें एक महामारी पैदा करने की क्षमता है। इसलिए हमें अभी से चेतावनी घोषित करने की जरूरत है। इसलिए यह निर्णय लेना आसान नहीं था। लेकिन मुझे लगता है कि उनमें से एक बात ऐसी थी जिसने उन्हें उस समय खतरे की घंटी बजाने के लिए मना लिया था, वह यह थी कि भले ही मामलों और मौतों की संख्या बेहद कम थी, लेकिन यह केवल इसलिए

था क्योंकि यह एक नई बीमारी थी और हमारे पास एंटीवायरल और कोई वैक्सीन नहीं थी। हमारे पास वास्तव में इस नए वायरस से निपटने के लिए कोई उपकरण या चिकित्सा इलाज नहीं था। हमें केवल बिना दवा के इलाज यानी जन स्वास्थ्य उपायों पर ही भरोसा करना था। और यही हम अब तक कर रहे हैं। लेकिन जैसा कि आप देख रहे हैं, दुनिया में इसे लागू करना बेहद कठिन है जो परस्पर जुड़ा है और जहां अर्थव्यवस्थाएं विश्व स्तर पर संचालित होती हैं। इसलिए यदि आप दुनिया में एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करना बंद कर देते हैं, तो इसका दुनिया के अन्य हिस्सों पर प्रभाव पड़ता है। सब कुछ जुड़ा हुआ है। इसलिए वैश्विक स्तर पर कोई समन्वित और व्यापक हस्तक्षेप करना तथा समाज और अन्य क्षेत्रों, जो स्वास्थ्य क्षेत्र नहीं हैं, पर अर्थव्यवस्था के नकारात्मक प्रभाव को सीमित करना बहुत ही मुश्किल है।

इस महामारी का 2009 के साथ फर्क बताने के लिए धन्यवाद। आपकी बातचीत से मुझे एक और चीज पता चली है, और वह यह है कि 2009 में पिछले हाल के अनुभवों के कारण, हर किसी को जरूरत के हिसाब से महामारी से विश्व स्तर पर जोड़ा गया। हालांकि, इसके बाद 10 वर्षों तक पूरी दुनिया में राजनीतिक परिवर्तन हुए हैं। डब्ल्यूएचओ को देखने पर, जहां तक मैं समझती हूं एक चुनौती यह है कि डब्ल्यूएचओ अपने आप में कोई शासन नहीं है।

आपके पास अपने सदस्य देशों को कुछ भी करने के लिए मजबूर करने की कोई शक्ति नहीं है। आप केवल उन्हें कार्यों की सिफारिश कर सकते हैं और उन्हें चीजों को करने के लिए मनाने की कोशिश कर सकते हैं। तो मुझे हैरानी होती है कि डब्ल्यूएचओ कैसे काम कर रहा है या जन स्वास्थ्य कार्यों को करने का आग्रह करते हुए कैसे संतुलन बना रहा है जबकि वह किसी को कुछ भी करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता है।

हाँ, यह वास्तव में एक चुनौती है। विशेष रूप से आज की दुनिया में, जहां आप, मैंने देखा है कि देश किसी भी तरह से काफी विविध् हैं। मेरा मतलब विकास और जोखिम से है। कभी-कभी तो यह बिल्लियों को पालने जैसा होता है। लेकिन दो चीजें हैं जो हमारी मदद करती हैं। पहली बात ये अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य नियम हैं क्योंकि सभी देशों ने इस पर हस्ताक्षर किए हैं। और इसलिए वे इसके लिए प्रतिबद्ध हैं या इन नियमों से बंधे हुए हैं, भले ही यह कानूनी रूप से किसी राज्य के लिए बाध्यकारी नहीं है कि हम इसे माप नहीं सकते। किसी भी देश पर दबाव बनाने का कोई तरीका नहीं है। लेकिन फिर भी, इस

समझौते पर डब्ल्यूएचओ के सभी सदस्य देशों के बीच चर्चा हुई हैं, और इसलिए वे किसी भी तरह इसे लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

दूसरी बात जो काफी महत्वपूर्ण है, वह यह है कि हम केवल इस विशेष मुद्दे पर ही देशों के साथ काम नहीं कर रहे हैं। हम अन्य कार्यक्रमों पर भी उनके साथ काम कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, मलेरिया कार्यक्रम, एचआईवी कार्यक्रम। हम उनके साथ इन्फ्लूएंजा की रोकथाम आदि पर काम कर रहे हैं। इसलिए हमारा अन्य उद्देश्यों के लिए भी देशों के साथ संपर्क बना रहता है। और ये रिश्ते कोविड-19 से ही शुरू नहीं हो रहे हैं। मेरा मतलब है, यह कुछ ऐसा है जो एक तरह की पुरानी दोस्ती जैसा है और हम हर बार इस रिश्ते को निभाने की कोशिश करते हैं।

इसलिए आपसी समझ और सहयोग से काम करना आसान है। और यही हम करने की कोशिश करते हैं और हम देशों को यह समझाने की भी कोशिश करते हैं कि वे महामारी से कैसे बेहतर तरीके से निपट सकते हैं, क्योंकि महामारी को लेकर मेरा अनुभव यह है कि महामारी वाले देशों के लिए राजनीतिक जोखिम काफी अधिक होता है। उदाहरण के लिए, यदि आप देखें तो सऊदी अरब में मर्स महामारी के उभरने के बाद से स्वास्थ्य मंत्रालय में काफी बड़ा बदलाव हुआ है।

यह केवल स्वास्थ्य क्षेत्र पर एक राजनीतिक प्रभाव है। लेकिन यह राजनीतिक प्रभाव स्वास्थ्य क्षेत्र से परे भी हो सकता है और हर सरकार को पता है कि जब वे महामारी का सामना कर रहे हैं, तो यह उनके लिए भी खतरनाक है। वे शांत हो सकते हैं, कभी-कभी हमारी सलाह को बड़े ध्यान से सुनते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि हम उनकी इस कठिन परिस्थिति से निपटने में मदद कर सकते हैं।

इसका एक हिस्सा सूचना देना भी है, क्योंकि आम तौर पर समस्या के उभरने पर उसे छिपाने की प्रवृत्ति रहती है न कि उसे बताने की, इस उम्मीद के साथ कि यह अपने आप समाप्त हो जाएगी। लेकिन हम जानते हैं कि ऐसा महामारी के साथ कभी नहीं होता है। कभी नहीं। यह सभी जानते हैं, और इसलिए हमें प्रभावी, लेकिन सुरक्षित सूचना देने में सक्षम बनाने के लिए सरकारों के साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है, और हम इसे जोखिम की सूचना देना कहते हैं, ताकि महामारी के अनुसार बेहतर ढंग से निपटा जा सके, ताकि वे वास्तव में अच्छी प्रतिक्रिया को लागू कर सकें। और साथ ही राजनीतिक रूप से कोई चुनौती पैदा न हो।

हम अब सोशल मीडिया के युग में हैं, हमने सूचना के प्रबंध्न के लिए अन्य तंत्रा भी विकसित किए हैं, क्योंकि हर बार जब हमारा प्रकोप से सामना होता है, तो हमारे पास अफवाहों की एक महामारी भी होती है। इसलिए आप इसे फर्जी खबर या जो भी कह सकते हैं। लेकिन दिन के अंत में, सूचना की यह महामारी वास्तव में एक चुनौती बन सकती है। यह असली प्रतिक्रिया को रोक सकती है। उदाहरण के लिए, जब पश्चिम अफ्रीका में इबोला था, तो अफवाहें थीं कि यह इबोला नहीं है। यह ऐसा कुछ है जिसका आविष्कार किया गया है या लोग कह रहे थे कि इबोला उपचार केंद्र में मत जाओ क्योंकि वास्तव में वे आपके सभी अंगों को निकाल लेंगे और आपके अंगों को अमीर देशों में बीमार लोगों को भेज देंगे जिन्हें नए अंगों की आवश्यकता है। इसलिए कई तरह की अफवाहें थीं जो वास्तव में एक अच्छी प्रतिक्रिया और एक कुशल प्रतिक्रिया में बाध बन रही थीं। इसलिए सूचना की इस महामारी से निपटने के लिए मीडिया के साथ काम करना बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए हम जानते हैं कि नए उपकरण जैसे एआई और व्यापक डेटा स्क्रीनिंग, मीडिया स्क्रीनिंग, सोशल मीडिया कैसे काम करते हैं और कौन सी अफवाहें शुरू हो रही हैं ताकि हम भी इन अफवाहों का मुकाबला जल्द से जल्द कर सकें और लोग उनके आधार पर प्रतिक्रिया या राय न बना सकें।

मैं वास्तव में झूठी खबरों और दुष्प्रचार के मुद्दे को उठाने के लिए आपकी सराहना करता हूं क्योंकि ऐसा लगता है कि इन चुनौतियों में से एक यह है कि आप विज्ञान की प्रतिक्रिया को आधार बना रहे हैं। फिर भी, जैसा कि हमने पिछले कुछ महीनों में देखा है, विज्ञान पल-पल में बदल सकता है क्योंकि हम इस वायरस के बारे में बहुत कुछ सीख रहे हैं। इसलिए मुझे यह जानने में दिलचस्पी होगी कि आप इस बारे में थोड़ा बता सकते हैं कि आप विज्ञान की प्रतिक्रिया और इससे जुड़ी अनिश्चितता दोनों से कैसे निपटेंगे कि एक दिन ऐसा कुछ सच हो सकता है। फिर एक दिन आपको अपनी सिफारिश में सुधार करना पड़े।

हाँ यह सच है। हम एक तकनीकी संगठन हैं, इसलिए हम विज्ञान पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं। यह विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होता है जब आपका किसी नई बीमारी से सामना हो क्योंकि शुरुआत में आप कुछ भी नहीं जानते हैं। फिर थोड़ा-थोड़ा करके आप वायरस के बारे में, बीमारी के बारे में, लक्षणों के बारे में अधिक जानना शुरू कर देते हैं। इसलिए विज्ञान में कुछ भी स्थिर नहीं होता, ऐसा कुछ नहीं है, जिसे आप शुरुआत में जान लेते हैं, बल्कि यह बिल्कुल एक चित्रकला की तरह है। और आप चित्रकला पर से धीरे-धीरे परदा उठाते हैं, लेकिन आप एक बार में पूरी चित्रकला नहीं देखते हैं। और इसलिए इसमें समय लगता है।

जबकि आप ये बहुत सक्रिय वैज्ञानिक खोज कर रहे हैं, तो कठिनाई यह है कि आपको परिणामों और निष्कर्षों पर चर्चा करने के लिए वैज्ञानिकों को अनुमति देने की जरूरत होती है। और कभी-कभी वे सहमत नहीं होते हैं, जो वैज्ञानिक प्रक्रिया के लिए सामान्य बात है, क्योंकि कोई वैज्ञानिक खोज तभी सशक्त बनती है जब लोग उन पर चर्चा कर सकते हैं, उनके परिणामों को चुनौती दे सकते हैं ताकि वे वास्तविकता का कहीं बेहतर स्पष्टीकरण पा सकें। लेकिन कभी-कभी जनता को यह बताने में बहुत मुश्किल होती है कि विज्ञान स्थिर नहीं है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है। आप हर दिन थोड़ा-बहुत सीखते हैं और कभी-कभी आप गलतियाँ करते हैं, लेकिन आप उन्हें सुधार सकते हैं। और यह भी कि विज्ञान कोई एक विचार नहीं है। यह बहुत से विचारों का संगम है। आप थोड़ा-थोड़ा करके किसी एक नतीजे पर पहुंचते हैं। लेकिन किसी एक नतीजे पर पहुंचने के लिए समय लग सकता है और इस दौरान विचारों पर आपकी राय काफी अलग हो सकती है।

यह प्रक्रिया बहुत भिन्न हो सकती है, इससे जनता में बहुत चिंता पैदा हो सकती है क्योंकि वे वैज्ञानिकों पर भरोसा करते हैं और वे सोचने लगते हैं कि यदि वैज्ञानिकों को पता नहीं है, तो किसे पता है? और कौन हमारी मदद कर सकता है? इसलिए मुझे लगता है कि यह वह जगह है जहां हमारी भी भूमिका है, क्योंकि हर स्थिति में, निश्चित रूप से बहुत कुछ है जो हम नहीं जानते हैं। लेकिन हम बहुत कुछ जानते हैं, जरूरी नहीं कि इस विशेष बीमारी के बारे में, लेकिन हमारे पास अतीत में अन्य महामारियों का अनुभव है, भले ही वे अलग-अलग रोगजनकों या अलग-अलग वायरस के कारण हुई थीं। हमने उन चीजों को देखा है जो काम करती हैं। इसलिए हम इस अनुभव का उपयोग अतीत से वर्तमान को सूचित करने और भविष्य का मार्गदर्शन करने के लिए कर सकते हैं।

इसलिए यह एक तरह का संदेश है जिसे हमें बताने की जरूरत है कि अनिश्चितता के समय में, हर चीज़ अनिश्चित नहीं होती। कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें हमें खोजना है। लेकिन अनजानी दुनिया इतनी बड़ी नहीं है जितना लोग आमतौर पर सोचते हैं। और हमें आश्वस्त करने वाले संदेशों की जरूरत होती है, क्योंकि मुझे लगता है कि कठिनाई तब होती है जब लोग डरे हुए होते हैं। वे अपनी समझदारी, आलोचनात्मक समझ को थोड़ा कम कर देते हैं और वे विश्वास करने लगते हैं कि शायद लोग ज्यादा आश्वस्त थे। इसलिए हमें लोगों के साथ संबंध बनाने के लिए इस विश्वास को भी बनाए रखने की जरूरत होती है,

ताकि वे आप पर भरोसा करें, तब भी जब आप कहते हैं, मुझे नहीं पता। मुझे नहीं पता, लेकिन मैं जवाब खोज रहा हूं।

इस तरह का विश्वास संबंध बनाना बहुत महत्वपूर्ण है, अन्यथा लोग अपनी किसी आस्था पर विश्वास कर सकते हैं जो एक ऐसे किसी इलाज को बढ़ावा दे सकती है जो वास्तव में असली उपचार नहीं है बल्कि खतरनाक भी हो सकता है। इसलिए हमें लोगों को निश्चित रूप से इस तरह की व्यक्तिगत राय बनाने, या अपने खुद का व्यवसाय या अपना खुद का इलाज करने को प्रोत्साहित करने से बचाने की जरूरत है।

इसलिए आखिर में, मैं आपसे पूछना चाहती हूं, जैसा कि मैंने बातचीत करने से पहले कहा था, इस समय एक सौ पैंसठ देशों के पत्रकार इस कोर्स में भाग ले रहे हैं। हम उम्मीद करते हैं कि यह संख्या बढ़ सकती है। इनमें अनेक देश ऐसे हैं जहां संसाधन कम हैं। वे दुनिया के देशों का विकास कर रहे हैं। वे दुनिया के दक्षिण में हैं। इसलिए मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूं कि विशेष रूप से कम संसाधन वाले देशों में इस महामारी के पहुंचाने पर डब्ल्यूएचओ की समस्याएं क्या हैं? उन देशों के पत्रकारों को दुनिया भर में कोविड-19 की भूमिका के रूप में क्या देखना चाहिए?

हां, विकासशील देशों के संबंध में, हमारी मुख्य चिंता उनकी स्वास्थ्य प्रणाली की कमजोरी के कारण है। और जैसा कि आप जानते हैं, कोविड-19 में यदि आपके यहां केवल 20प्रतिशत लोगों को कोई गंभीर बीमारी है, यह अभी भी 20 प्रतिशत लोग हैं जिन्हें किसी प्रकार की खास देखभाल की जरूरत होगी। इसलिए हमारी चिंता वास्तव में उन लोगों की देखभाल को लेकर है, ताकि हम मृत्यु दर को भी कम कर सकें। किसी तरह यह वायरस बुजुर्ग लोगों में अधिक गंभीर बीमारी भी पैदा कर रहा है। अधिकांश विकासशील देशों में अभी भी युवा आबादी है। इसलिए हम आशा करते हैं कि यह किसी भी तरह गंभीर मामलों के बढ़ने से बचाएगा। लेकिन फिर भी, हमारे पास बहुत सारे अज्ञात कारण हैं क्योंकि हम जानते हैं कि यह वायरस कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोगों में अधिक गंभीर बीमारी बनकर उभरेगा। उदाहरण के लिए, बच्चों, खासकर कुपोषित बच्चों में प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है। इसलिए उन्हें गंभीर बीमारी हो सकती है? यह कुछ ऐसा है जिसे हम अभी तक नहीं जानते हैं।

इसलिए हम ऐसे देशों में कमजोर स्वास्थ्य प्रणाली के कारण होने वाली संभावित उच्च मृत्यु दर को लेकर चिंतित हैं। लेकिन हम उन देशों में स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों की विश्वसनीयता को लेकर भी बहुत

चिंतित हैं, क्योंकि जब आप एक बीमार व्यक्ति की देखभाल कर रहे होते हैं, तो आप जोखिम में होते हैं या आपको बीमारी के संपर्क में आने की संभावना अधिक होती है। हमने एक अमीर देश में भी देखा है, 10 प्रतिशत स्वास्थ्य कार्यकर्ता प्रभावित हुए हैं।

इसलिए यह एक बड़ी चिंता का विषय है क्योंकि मुझे नहीं पता कि आपको 2014 का इबोला याद है। इबोला से 800 स्वास्थ्य कार्यकर्ता प्रभावित हुए थे और उनकी मृत्यु हो गई थी। लेकिन ऐसे देशों में, कभी-कभी आपके पास एक लाख लोगों पर एक डॉक्टर होता है। इसलिए जब आप एक डॉक्टर को खो देते हैं, तो आपके पास आबादी का एक बड़ा हिस्सा होता है जिसकी देखभाल के लिए कोई नहीं होता है। इसलिए ऐसे देशों में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को खोने का प्रभाव अमीर देशों की तुलना में बहुत अधिक हो सकता है। यह दूसरी बात है कि हम वास्तव में चिंतित हैं, क्योंकि हम पहले से ही कमजोर स्वास्थ्य प्रणालियों पर इसके प्रभाव को लेकर भयभीत हैं।

अंत में, मुझे लगता है कि महामारी हमेशा समाज पर प्रभाव डालती है। इसलिए संभवतः इसके प्रभाव का आकलन करना मुश्किल है। खासकर जब यह एक नई बीमारी है। लेकिन हम जानते हैं कि इसका प्रभाव कार्यबल पर पड़ेगा या तो उनकी अनुपस्थिति से या बड़ी संख्या में लोगों के अस्पताल में भर्ती होने के कारण। हम जानते हैं कि इसका समाज पर प्रभाव पड़ेगा और इससे सामाजिक अशांति पैदा हो सकती है। इसका अर्थव्यवस्था पर असर पड़ेगा। इसके कई प्रभाव होंगे।

इसका असर पर्यटन पर, व्यापार पर, यात्रा पर, सामाजिक जीवन के कई अन्य पहलुओं पर पड़ेगा। हम इन पहलुओं का आकलन नहीं कर सकते, हम जानते हैं कि वे होंगे। और हमारी भूमिका वास्तव में आबादी के स्वास्थ्य की स्थिति को लेकर नहीं है, बल्कि सामाजिक जीवन के सौदों या क्षेत्रों पर भी महामारी के प्रभाव को कम करने की कोशिश से भी संबंधित है।

मैं आपकी सराहना करता हूं कि आपने इतने विस्तार से बातचीत की, खासकर दुनिया के दक्षिण में लोग इसके बारे में जानने को उत्सुक हैं, बल्कि इस महामारी की अनिश्चितता पर भी, जो अपने शुरुआती दौर में है, और आसपास के समाज के लिए खतरा बनी हुई है। दुनिया भर के कई देशों के हमारे सभी छात्रों की ओर से, मैं आपके इन विचारों के लिए आपका एक बार फिर से शुक्रिया अदा करती हूं। हमारे साथ वक्त गुज़ारने के लिए हम आपके आभारी हैं। धन्यवाद।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।